छोड़ दे मनवा घर की आस

छोड़ दे मनवा घर की आस,
तभी मिले बरसानो वास,

जग झूठा झूठी जग आशा,
त्याग दे इस जग की अभिलाषा,
हरी चिंत्तन का कर अभ्यास,
तभी मिले वृद्धावन वास,
छोड़ दे मनवा घर की आस,

विषय विकारो से बच जाना,
सतये धर्म शुभ कर्म कमाना,
शरधा भक्ति बड़ी विश्वाश,
तभी मिले बरसानो वास,
छोड़ दे मनवा घर की आस,

संत शरण गुरु चरण पखारो,
कर हरी भजन ये जन्म सांवरो,
कट जाते बंधन यम को त्रास,
तभी मिले वृद्धावन वास,
छोड़ दे मनवा घर की आस,

गुरु किरपा हरी मिलन करावे,
हरी किरपा हरी धाम ले जावे,
जपले **'मधुप'** तू श्री हरिदास,
तभी मिले बरसानो वास,
छोड़ दे मनवा घर की आस,

जय जय श्यामा जय जय श्याम जय जय श्री वृद्धावन धाम,
जय जय श्यामा जय जय श्याम जय जय श्री बरसानो धाम,

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)
स्वर : सर्व मोहन (टीनू सिंह)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/6933/title/chod-de-manwa-ghar-ki-aas-tabhi-mile-barsano-vaas

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |